

NEERAJ®

M.R.D. -004 ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ

(Research Methods in Rural Development)

Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers

Based on

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Manish Kumar



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: -

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Published by:



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Get books by Post & Pay Cash on Delivery:

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ

(Research Methods in Rural Development)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2		
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2		
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1–2		
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1–2		
		Question Paper—June, 2019 (Solved)	
Question Paper—December, 2018 (Solved)		1–5	
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1–2		
		S.No. Chapterwise Reference Book	Page
		प्रामीण विकास में अनुसंधान (Research in Rural Development)	
प्रामीण विकास में अनुसंधान (Research in Rural Development) 1. अनुसंधान की प्रस्तावना : उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र(Introduction to Research: Purpose, Nature and Scope)	1		
1. अनुसंधान की प्रस्तावना : उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र			
 अनुसंधान की प्रस्तावना : उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र	9		

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:



www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June - 2023

(Solved)

ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ (Research Methods in Rural Development)

M.R.D.-004

समय : 3 घण्टे | [अधिकतम अंक : 100

नोट : (i) सभी **पांचों** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (ii) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. वैज्ञानिक अनुसन्धान में सिद्धान्त की भूमिका का वर्णन कीजिए। 'अनुसन्धान' और 'वैज्ञानिक अनुसन्धान' के बीच अन्तर कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 2 तथा प्रश्न 1 अथवा

सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिक पद्धित के प्रयोग की क्या सीमाएँ हैं?

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 3 तथा पृष्ठ-3, 'समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग की संभावनाएं तथा सीमाएं'

प्रश्न 2. अनुसन्धान परियोजना में साहित्य की समीक्षा और परिकल्पना के महत्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-28-29, 'साहित्य की समीक्षा'

अथवा

अनुसन्धान प्रारूप क्या है? अनुसन्धान परियोजना में एक शोध प्रारूप के उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-29, 'अनुसंधान प्रतिमान डिजाइन' तथा पृष्ठ-32, प्रश्न 3

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(a) उन मान्यताओं का वर्णन कीजिए, जिन पर पैरामीट्रिक परीक्षणों का उपयोग आधारित है।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-15, पृष्ठ-139, प्रश्न 1

(b) उन मान्यताओं का वर्णन कीजिए, जिन पर गैर-पैरामीट्क परीक्षण आधारित है।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-15, पृष्ठ-139, प्रश्न 4

(c) एक शोध रिपोर्ट के प्रमुख भाग क्या हैं? संक्षेप में प्रत्येक भाग के महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-16, पृष्ठ-147, प्रश्न 1 प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(a) गैर-संभाव्यता नमूना के प्रकार उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-80, प्रश्न 3 (b) एक अच्छे निदर्शन की विशेषताएँ

उत्तर – संदर्भ – देखें अध्याय-9, पृष्ठ-75, 'जनसंख्या और नमने की संकल्पना'

(c) रेटिंग पैमाने के प्रकार

उत्तर – रेटिंग स्केल श्रेणियों का एक समूह है, जिसे मात्रात्मक या गुणात्मक विशेषता के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। सामाजिक विज्ञानों में, विशेष रूप से मनोविज्ञान में, सामान्य उदाहरण लिकर्ट प्रतिक्रिया स्केल और 1–10 रेटिंग स्केल हैं, जिसमें एक व्यक्ति उस संख्या का चयन करता है जिसे किसी उत्पाद की कथित गुणवत्ता को प्रतिबिंबित करने के लिए माना जाता है।

इसे भी देखें-संदर्भ-अध्याय-10, पृष्ठ-87, 'श्रेणी मापदंड'

(d) किस मामले में एक साक्षात्कार प्रश्नावली से कम उपयोगी है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-100, प्रश्न 1

(e) अवलोकन के प्रकार और उनमें शामिल चरण। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-98, 'अवलोकन', पृष्ठ-99, 'अवलोकन की प्रक्रिया में अवस्थाएं'

(f) दस्तावेजों के विभिन्न प्रकार।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-101, प्रश्न 3

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर अति संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(a) अनुभवजन्य अनुसन्धान में शामिल कदम।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-37, 'अनुभवजन्य अनुसंधान प्रक्रिया'

(b) घटना विज्ञान का अर्थ।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-37-39, 'घटना क्रिया विज्ञान'

(c) आलोचनात्मक सामाजिक अनुसन्धान में दृष्टिकोण। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, 'विवेचनात्मक सामाजिक अनुसंधान में दृष्टिकोण'

(d) सर्वेक्षण अध्ययन में शामिल चरण। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-52, प्रश्न 1

2 / NEERAJ : ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ (JUNE-2023)

(e) सहसम्बन्ध अध्ययन का उद्देश्य। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-53, प्रश्न 2

(f) अवलोकन एक प्रायोगिक अध्ययन है।

उत्तर—अवलोकन प्रायोगिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अवयव है।

इसे भी देखें-संदर्भ-अध्याय-6, पृष्ठ-50, 'प्रायोगिक अनुसंधान के 3 लक्षण' तथा '3. अवलोकन'

- (g) रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच अन्तर। उत्तर – रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के बीच अन्तर –
- (1) संरचनात्मक मूल्यांकन अल्पकालिक निर्णयों को लेने में सहायक होता है, जबिक योगात्मक मूल्यांकन दीर्घकालीन निर्णयों को लेने में सहायक होता है। उदाहरणार्थ—संरचनात्मक मूल्यांकन में अध्यापक कक्षा में शिक्षण करते समय शिक्षण प्रश्नों को पूछकर छात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करता है तथा तद्नुरूप अपनी शिक्षण शैली में तुरन्त परिवर्तन कर लेता है। योगात्मक मूल्यांकन में छात्रों के समग्र मूल्यांकन के आधार पर उन्हें अगली कक्षा में प्रोन्नति प्रदान करने सम्बन्धी दीर्घकालीन निर्णय लिए जाते हैं।
- (2) संरचनात्मक मूल्यांकन के अन्तर्गत अध्यापक अथवा मूल्यांकनकर्ता शैक्षिक कार्यक्रम के प्रत्येक अंग (शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री) का मूल्यांकन करने के साथ उनके

निर्माण में सिक्रिय भूमिका अदा करता है, जबिक योगात्मक मूल्यांकन में अध्यापक शैक्षिक कार्यक्रम के निर्णय में कार्य नहीं करता, बिल्क उसके प्रतिफल के रूप में छात्र उपलब्धि का मूल्यांकन करता है। इससे शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावकारिता एवं सार्थकता के विषय में जानकारी होती है।

- (3) डेनियल स्टुफल बीम ने संरचनात्मक मूल्यांकन के भेद को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उसने संरचनात्मक मूल्यांकन को पूर्वक्रिया अवस्था में निर्णय लेने के लिए आवश्यक बताया है, जबिक योगात्मक मूल्यांकन की जबावदेही के लिए मूल्यांकन की संज्ञा दी है। योगात्मक मूल्यांकन शैक्षिक कार्यक्रम की समाप्ति पर अर्थात् पश्चोंक्रियाशील होता है तथा यह जबावदेही के लिए आधार प्रस्तुत करता है।
- (4) संरचनात्मक मूल्यांकन द्वारा शैक्षिक कार्यक्रम के विभिन्न अंगों के गुण-दोष और किमयों का पता चल जाता है तथा उन किमयों को दूर करके शिक्षण कार्यक्रम अथवा पाठ योजना को और बेहतर एवं प्रभावपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन द्वारा प्राप्त उपलब्धि परिणामों के आधार पर छात्रों में भेद किया जाता है अर्थात् उनकी योग्यता तथा गुणवत्ता के आधार पर समूह में उनकी सापेक्षित स्थिति निश्चित की जाती है।

इसे भी देखें – संदर्भ – अध्याय 7, पृष्ठ-61, प्रश्न 1, 'संचयी मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन एक समान है'

PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:



www.neerajbooks.com

र्गाम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ

(Research Methods in Rural Development)

ग्रामीण विकास में अनुसंधान (Reseach in Rural Development)

अनुसंधान की प्रस्तावना : उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र

(Introduction to Research: Purpose, Nature and Scope)



परिचय

अनुसंधान एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। अनुसंधान के द्वारा किसी घटना या प्रक्रिया के बारे में लाभप्रद सूचना प्राप्त की जाती है। अनुसंधान को एक ऐसे व्यवस्थित अन्वेषण के रूप में पिरभाषित किया जा सकता है जो सामाजिक घटनाओं या प्रक्रियाओं को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में अनुसंधान वस्तुनिष्ठता पर बल देता है एवं अनुसंधान वैज्ञानिक दृष्टकोण का पालन करता है। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें अनुसंधान से सम्बन्धित कार्य न किये जा रहे हों। अनुसंधान का उद्देश्य विकास के साथ-साथ ग्रामीण विकास से सम्बन्धित समस्याओं को समझने में हमारी सहायता करना है। अनुसंधान से न केवल हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है, बल्कि ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सामने आने वाली समस्याओं का समाधान भी होता है। आज ग्रामीण विकास के बहत-से क्षेत्रों में अनुसंधान विधियों का प्रयोग किया जा रहा है।

प्रस्तुत अध्याय अनुसंधान की प्रस्तावना, उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र से सम्बन्धित है। इसके अंतर्गत अनुसंधान तथा वैज्ञानिक अनुसंधान का अर्थ, वैज्ञानिक अनुसंधान की अवधारणा, आधार, विभिन्न वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे पहलुओं पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त अनुसंधान का वर्गीकरण, प्रकृति तथा ग्रामीण विकास में अनुसंधान का क्षेत्र जैसे विषयों को भी जानने एवं समझने का प्रयास किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अनुसंधान तथा वैज्ञानिक अनुसंधान का अर्थ अनुसंधान

हम प्राय: वस्तुओं एवं घटनाओं के संदर्भ में अपनी पूर्व धारणाओं से अनजान होते हैं, इसलिए हम वस्तुओं या घटनाओं के बारे में अपने अवलोकन को पर्यवेक्षण की जाने वाली वस्तुओं और घटनाओं पर डाल देते हैं। अवलोकन त्रुटिरहित हो, इसके लिए कुछ सीमाएं हैं, जिन्हें जानना अवश्यक है। नई जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया कोई भी अध्ययन जिससे हमारा ज्ञान बढ़ता है, वह चाहे अवलोकन द्वारा हो या अन्य किसी विधि द्वारा, अनुसंधान कहलाता है। इसके अंतर्गत पूर्वाग्रह, त्रुटियाँ तथा सीमाएँ सम्मिलित हैं। वास्तव में ज्ञान वृद्धि के लिए घटनाओं के व्यवस्थित तथा विश्लेषणात्मक अन्वेषण को अनुसंधान कहा जाता है।

ग्रामीण विकास में अनुसंधान से तात्पर्य अनुसंधान विधियों के प्रयोग से है। इससे ज्ञान बढ़ता है एवं पेशेवरों द्वारा उन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है, जो ग्रामीण विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं। शोध द्वारा उपलब्ध सूचना का प्रयोग विभिन्न पेशेवरों द्वारा निर्णय लेने से पहले किया जाता है, जो ग्राहकों, कार्यक्रमों, सेवाओं या एजेंसियों को प्रभावित करता है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैं, जहाँ ग्रामीण विकास में अनुसंधान विधियों को प्रयुक्त किया जाता है—

- एक सामुदायिक कार्यकर्त्ता ग्रामीण समुदाय में व्यक्तियों तथा परिवारों की संभावित प्रभावशीलता के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता है।
- एक सामूहिक कार्यकर्त्ता इस बात का अनुमान लगाना चाहता है कि ज्ञान को बढ़ाने में कौन-सी तकनीक का प्रभाव अधिक है।
- एक सामुदायिक कार्यकर्त्ता समुदाय के दृष्टिकोणों को जानना चाहता है।
- एक सामुदायिक कल्याण केन्द्र का निदेशक जानना चाहता है कि महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए स्वयं सहायता समृह में आय सृजन योजना प्रभावी रहेगी या नहीं।
- एक प्रशासक कार्यक्रम के क्रियान्वयन की प्रभावशीलता के बारे में चिन्तित रहता है।

2 / NEERAJ : ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ

ये कुछ ऐसे उदाहण हैं जो ग्रामीण विकास में अनुसंधान को आवश्यक बनाते हैं। अनुसंधान विकास व्यवसायियों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराता है, जो उनके अनुसंधान व्यवहार में अंतर रखने में सहायक होता है। अनुसंधान में उन बातों एवं विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जो कार्यक्रमों तथा प्रणालियों के मूल्यांकन में लाभप्रद होते हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान

विज्ञान का मुख्य लक्ष्य प्रकृति के विषयों एवं घटनाओं को समझना एवं उनका स्पष्टीकरण करना है। अनुसंधान एक ऐसा कार्य है जिससे ज्ञान बढ़ता है एवं इसमें व्यवस्थित एवं विश्लेषणात्मक अन्वेषण शामिल है। हम वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रकृति की विभिन्न घटनाओं के अन्वेषण, उनको स्पष्ट करने तथा उनके बीच सम्बन्धों को ज्ञात करने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान के अवधारणात्मक आधार तथ्य तथा सिद्धांत

समाज विज्ञान का सम्बन्ध मानवीय व्यवहार से है, जो जटिल तथा गतिशील है, इसलिए इसका अन्वेषण निर्देशित स्थितियों में नहीं किया जा सकता। इससे अनुसंधानकर्त्ता के सामने पूर्वाग्रह तथा व्यक्तिगत सामान्यीकरण जैसी समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान तथ्यों से आरंभ होकर सिद्धांतों के निर्माण की ओर बढ़ता है। इसको लाभप्रद बनाने के लिए तथ्यों को व्यवस्थित किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक विधि का पहला उद्देश्य तथ्यों को व्यवस्थित करने की एक विधि विकसित करना है। वैज्ञानिक जैसे-जैसे तथ्यों को इकट्ठा करते जाते हैं, वैसे-वैसे इन्हें एकीकृत, व्यवस्थित तथा वर्गीकृत करने की आवश्यकता होती है।

जब अलग-अलग तथ्यों को किसी योजना में एकीकृत करके ऐसे कार्यों में लगाया जाता है, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो, तो हम वैज्ञानिक क्षेत्र की ओर बढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में तथ्यों की प्रकृति तथा महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होता है। इन तथ्यों में महत्त्वपूर्ण सम्बन्धों को चिह्नित किया जाना चाहिए एवं इन्हें स्पष्ट होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, सिद्धांत सूत्रबद्ध होने चाहिए। सिद्धांतों को उस रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए जो घटना का व्यवस्थित रूप प्रस्तुत करें तथा इसका मुख्य उद्देश्य घटना का पूर्वानुमान करना एवं उसे स्पष्ट करना हो।

सिद्धांत अवलोकनों के परिणामों को बताता है एवं वैज्ञानिकों को कारकों के मध्य सम्बन्धों के बारे में विचार प्रस्तुत करने हेतु सक्षम बनाता है। उदाहरणार्थ, बॉयल का नियम, इसमें गैसों की मात्रा के तापमान में परिवर्तन के अवलोकित प्रभावों का सार इस कथन में है—''स्थिर दबाव में गैस का तापमान एवं आयतन बढ़ता है एवं गैस के तापमान में कमी होने से उसकी मात्रा घटती है।'' उपर्युक्त तथ्यों में सिद्धांत न केवल पिछली सूचना को बताता है, बिल्क अन्य घटना के बारे में भी बताता है कि तापमान में वृद्धि का प्रभाव गैसों पर कैसे होता है।

सिद्धांत तथ्यों पर एवं तथ्य सिद्धांतों पर आधारित होते हैं। तथ्य अपना महत्त्व सैद्धान्तिक रचना से प्राप्त करते हैं। वेन डलेन के अनुसार, "तथ्यों और सिद्धांतों के बीच एक सतत एवं जटिल सम्बन्ध होता है। सिद्धांतों के बिना तथ्यों का महत्त्व नहीं होता एवं तथ्यों के बिना सिद्धांतों का महत्त्व नहीं होता। दोनों एक-दूसरे से महत्त्व प्राप्त करते हैं। इस प्रकार विज्ञान का विकास तथ्यों के संचय तथा नए सिद्धांतों के निर्माण पर आधारित है।"

प्रारंभिक अवस्था में अनुसंधान का प्रयास विशेष समस्याओं के समाधान ढूँढने तक सीमित रहना चाहिए। बाद में इसकी प्रवृत्ति समस्याओं को दूर करके निष्कर्ष की ओर बढ़ने की होती है। वैज्ञानिक सिद्धांत ज्ञान के कठिन अंशों को अर्थपूर्ण एवं वास्तविक बनाने का प्रयास करते हैं।

पिकल्पना तथा सिद्धांत

सिद्धांत का उद्देश्य

परिकल्पना तथ्यों एवं इनके बीच के सम्बन्धों को कम ही स्पष्ट करती है। सामान्यीकरण विस्तृत घटना पर आधारित एक परिकल्पना है। सिद्धांत एक से अधिक तथ्यों तथा इनके बीच के सम्बन्धों को स्पष्ट करता है। इसके अतिरिक्त नियमों का कार्यक्षेत्र अधिकतम एवं व्यापक होता है।

अनुसंधान में सिद्धांत की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, परन्तु नए तथ्यों की खोज द्वारा इन्हें समायोजित नहीं करने के कारण सिद्धांत में संशोधन करना पड़ता है। साधनों द्वारा बनाए गए सिद्धांतों को लाभकारी अवधारणा की संरचना के रूप में ही देखा जाना चाहिए। अत: नए तथ्य तथा प्रमाण प्राप्त करते समय प्रत्येक सिद्धांत को संशोधित करना जरूरी होता है।

विज्ञान के विकास में सिद्धांत द्वारा अनेक उद्देश्यों को पूरा किया जाता है जिनमें से तीन प्रमुख हैं—पहला, सिद्धांत ज्ञान को सार रूप देता है तथा क्रमबद्ध करता है। सिद्धांत द्वारा आँकड़ों की अधिक समझ होती है एवं यह निष्कर्षों को सरलता से अपनाए जाने के योग्य बनाता है। सिद्धांत प्रत्यक्ष अथवा घटनाओं तथा सबंधों के लिए स्पष्टीकरण उपलब्ध कराता है। यह कारकों की पहचान करके इनके संबंधों की प्रकृति को पहचानता है। तीसरा, सिद्धांत घटना के घटित होने का अनुमान लगाता है तथा अन्वेषक की धारणा बनाने में सहायता देने के अलावा अज्ञात घटना की जानकारी भी देता है।

उदाहरण के लिए, समय-सारणी बनाते समय इसके तत्त्वों की आवृत्ति में कुछ अंतर देखा जाता है, जबिक सिद्धांत के अनुसार यह अंतर नहीं होना चाहिए। सिद्धांत द्वारा छूटे हुए तथ्यों को ढूंढने का प्रयास किया जाता है। इसके अतिरिक्त सिद्धांत अन्वेषण के लिए नया ज्ञान विकसित करने की प्रेरणा भी देता है।

सिद्धांत का विकास

अच्छे सिद्धांतों की उत्पत्ति कल्पना एवं मनन करने से नहीं होती। सिद्धांत सामूहिक तथ्यों पर आधारित होता है। अन्वेषक यह विचारता है कि कैसे तथ्यों को क्रमबद्ध किया जाये। वह परिकल्पना को आगे बढ़ाता है एवं परिकल्पनाओं से निष्कर्ष निकालता है। तथ्यों

अनुसंधान की प्रस्तावना: उद्देश्य, प्रकृति तथा क्षेत्र / 3

के आधार पर अवधारणात्मक ढाँचा तैयार करता है एवं सिद्धांतों का निर्माण करता है। सिद्धांत सामान्यत: साक्ष्यों पर आधारित होते हैं। सिद्धांत वे साधन होते हैं, जिनसे हमारा ज्ञान बढ़ता है। अवधारणात्मक ढाँचे में रहकर सिद्धांतों के साक्ष्यों को जाँचा जा सकता है।

सिद्धांतों में विषयों से संबंधित शर्ते शामिल होती हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता। जैसे गुरुत्वाकर्षण को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता, हालांकि इसके प्रभाव को देखा जा सकता है। सिद्धांत की शर्त को कभी-कभी रचना कहा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण

विधि का मूल्यांकन किये बिना अनुसंधान की प्रकृति एवं विषय-वस्तु को समझा नहीं जा सकता। वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रयुक्त विधि को वैज्ञानिक विधि कहा जाता है। जॉर्ज लुंडबर्ग (1946) ने वैज्ञानिक विधि को तीन चरणों में विभक्त किया है—अवलोकन, वर्गीकरण एवं ऑंकड़ों की व्याख्या। इन चरणों से वैज्ञानिक विधि में सत्यता के साथ-साथ विश्वसनीयता भी आती है।

लुंडबर्ग (1946) के अनुसार वैज्ञानिक अन्वेषण आदेशित नहीं होता। इसका लक्ष्य वास्तविक तथ्यों का पता लगाना होता है, इसिलए अन्वेषक अपने निष्कर्षों में विश्लेषणात्मक विश्वास रख सकता है। इसके साथ-साथ वैज्ञानिक विधियों का संबंध सामूहिक विषयों से है, जिनकी विशेषता सार्वभौमिकता एवं भविष्यवाणी करना है। विधि के द्वारा किसी घटना के बारे में सत्यता के साथ-साथ पूर्वानुमान लगाना संभव होता है।

समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग

समाज विज्ञान का संबंध मानवीय व्यवहार से होता है, जो मुख्यत: जटिल एवं गतिशील होता है। अत: कोई भी व्यक्ति प्राकृतिक तथा भौतिक विज्ञान की तरह से दी गई स्थितियों में मानवीय व्यवहार का अन्वेषण नहीं कर सकता। इसके अनुसंधानकर्ता के सामने व्यक्तिपरकता एवं सामान्यीकरण जैसी समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

प्रकृति तथा समाज विज्ञान के विषयों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक विधि अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। वैज्ञानिक विधि को सामाजिक घटनाओं के अध्ययन हेतु तब तक स्वीकार किया जा सकता है, जब तक वह मान्य सामान्यीकरण में पहुँचने में सहायक है।

समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग की संभावनाएँ तथा सीमाएँ

शैक्षिक अनुसंधान के विषय प्राकृतिक विज्ञान की तुलना में अधिक जिटल होते हैं। विभिन्न आलोचनाओं के अनुसार समाज विज्ञान अनुसंधान त्रुटिपूर्ण कल्पना से उत्पन होता है, जिसका मानवीय परिवेश में उपयोग काफी जिटल है इसिलए एक सामाजिक अनुसंधानकर्ता को ऐसी अनुसंधान विधियों का चयन करना चाहिए, जो समस्या के प्रति जवाबदेह हों। इसके अतिरिक्त मात्रात्मक तथा गुणात्मक अनुसंधान विधियों के बीच भी संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

मानवीय व्यवहार के सिद्धांतों की खोज काफी मुश्किल होती है, इसलिए सामाजिक वैज्ञानिकों को अवलोकनों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। विषय से संबंधित गुणात्मक निर्णयों को परिमाणात्मक परिमापों के द्वारा पूरा किया जाता है। आँकड़ों में परिमाणात्मकता एवं सामान्यीकरण प्रक्रिया की कमी सामाजिक अनुसंधान की सफलता में बाधक बन सकती है। समाज विज्ञान में अधिकांश विषय गुणात्मक होते हैं एवं परिमाणात्मक कथनों को सही नहीं माना जाता।

मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों तकनीकें अनुसंधान में अपनाई जाती हैं। समाज विज्ञान सामान्यीकरण तथा घटनाओं का सही अनुमान लगाने में असफल रहा है। समाज विज्ञान प्रकृति विज्ञान की तरह विज्ञान के उद्देश्यों को जानने में शायद असमर्थ रहेगा, क्योंकि समाज विज्ञान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुप्रयोग की अनेक सीमाएँ हैं। ये सीमायें निम्नलिखित हैं—

विषय-सामग्री की जिटलता—इसमें एक मुख्य बाधा विषय-सामग्री की जिटलता है। प्राकृतिक विज्ञान भौतिक तथा जैविक घटनाओं से संबंधित है। इन घटनाओं के संदर्भ में घटकों को नापा जा सकता है एवं एक सामान्य नियम बनाया जा सकता है। जैसे बॉयले का गैसों की मात्रा पर दबाव के प्रभाव का नियम। दूसरी ओर समाज विज्ञान का संबंध मानवीय विषयों से है। इसका संबंध मानवीय व्यवहार एवं विकास दोनों से है। जिटल मानवीय व्यवहार को समझने के लिए स्वतंत्र कारकों पर विचार होना चाहिए। इसके अतिरिक्त मानवीय व्यवहार तथा समूह के सदस्यों के व्यवहार का प्रभाव भी समाज वैज्ञानिकों द्वारा देखा जाना चाहिए। अत: अनुसंधानकर्ताओं को सामान्यीकरण करते समय विशेष रूप से सचेत रहने की आवश्यकता होती है, क्योंकि एक समूह से प्राप्त आँकड़े दूसरे समूह के लिए मान्य नहीं हो सकते।

अवलोकन में किठनाइयाँ—प्रकृति विज्ञान की तुलना में समाज विज्ञान में अवलोकन ज्यादा किठन होता है। समाज विज्ञान में अवलोकन ज्यादा व्यक्तिपरक होता है। उदाहरण के लिए, अन्वेषण का विषय प्राय: एक व्यक्ति द्वारा दिया गया उत्तर है, जो दूसरे व्यक्ति का व्यवहार होता है। अवलोकनकर्ता को जब यह ज्ञात हो कि व्यवहार में कोई उद्देश्य, दृष्टिकोण या मूल्य शामिल है, तो उसे व्यक्तिपरक व्याख्या करनी चाहिए। परन्तु समस्या यह है कि समाज वैज्ञानिकों के अपने मूल्यों तथा दृष्टिकोणों पर टिप्पणियों एवं निष्कर्षों के मूल्यांकनों का भी प्रभाव होता है। घटना के अध्ययन के लिए कम व्यक्तिपरक व्याख्या की आवश्यकता होती है।

पुनरावृत्ति में कठिनाइयाँ—दो रसायनों के मध्य प्रतिक्रिया को एक वैज्ञानिक यथार्थ रूप में देख सकता है। निष्कर्षों को बताया जा सकता है एवं अवलोकनों की पुनरावृत्ति की जा सकती है। सामाजिक

4 / NEERAJ : ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियाँ

विज्ञान में पुनरावृत्ति अक्सर कठिन होती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक घटना एकाकी होती है एवं इसे दोहराया नहीं जा सकता।

एक अवलोकनकर्ता तथा विषयों के बीच विचार-विमर्श-सामाजिक घटना का अवलोकन ही परिवर्तन दर्शा सकता है। अनुसंधानकर्ता विचार कर सकते हैं कि X के कारण Y घटित होता है, परंतु यह अनुसंधानकर्ता की अपनी सोच हो सकती है। उदाहरणार्थ, हाथॉर्न प्रयोग में मजदूरों की उत्पादकता में परिवर्तन इस कारण से होता है कि उनको अन्वेषण से बाहर कर दिया जाता है। समाज विज्ञान में अधिकांश अनुसंधानों में मनुष्यों को मानवीय व्यवहार के संबंध में अवलोकनकर्ताओं को उत्तर देना होता है।

नियंत्रण में किठनाइयाँ—मानवीय विषयों पर प्रयोग करने की संभावना प्राकृतिक विज्ञान की तुलना में काफी सीमित है। मानवीय विषयों के अनुसंधान में निहित जिटलताएँ नियंत्रण संबंधी किठनाई उत्पन्न करती हैं। प्रकृति विज्ञान में प्रयोग की स्थितियों को नियंत्रण में रखा जा सकता है, परंतु मानवीय विषयों पर ऐसा नियंत्रण संभव नहीं है। समाजवैज्ञानिकों को एक साथ अनेक चरों के साथ व्यवहार तथा कम सुस्पष्ट परिस्थितियों में कार्य करना चाहिए, परंतु यह अत्यंत किठन कार्य है।

मापन की समस्याएँ—प्रयोग के दौरान घटकों को नापा जाना चाहिए। समाज विज्ञान में नापने के साधन अपूर्ण तथा अस्पष्ट होते हैं। मानवीय व्यवहार को समझना काफी जटिल है, क्योंकि निर्धारक तत्त्व स्वतंत्र एवं आश्रित रूप में कार्य करते हैं। समाज विज्ञान में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु बहुसांख्यिकीय विधियाँ उपलब्ध होती हैं। साथ ही ये विधियाँ शोधकर्ता को नाप के समय तत्त्वों की विसंगति को देखने में सहायता करती हैं। इसके अतिरिक्त तत्त्वों का पिरमाप निर्धारण के समय मापने योग्य नहीं होता। चूँिक व्यावहारिक विज्ञान अनुसंधान काफी जटिल होता है अत: शोधकर्ताओं को सामान्यीकरण के समय सावधानी बरतनी चाहिए। सामान्यीकरण के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले अनेक अध्ययन करने चाहिए। उक्त बाधाओं के बावजूद भी समाज विज्ञान ने काफी उन्नित की है। अनुसंधान क्रियाकलापों में विधियाँ ज्यादा व्यावहारिक रूप से अपनाई जा रही हैं।

अनुसंधान का वर्गीकरण

प्रत्येक शोध अध्ययन का अपना उद्देश्य होता है। अनुसंधान अध्ययन को इसके उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है—

अन्वेषणात्मक या प्रतिपादित अनुसंधान

किसी विशिष्ट परिकल्पना को विकसित करने के उद्देश्य से बनाए गए अनुसंधान समस्या का अध्ययन अन्वेषणात्मक या प्रतिपादित अनुसंधान कहलाता है।

विवरणात्मक अनुसंधान

इस अनुसंधान में एक व्यक्ति या समूह की विशेषताओं का सही प्रस्तुतीकरण करने के लिए अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य वास्तविकता की जानकारी देना है।

निदानात्मक अनुसंधान

घटना की आवृत्ति क्या है एवं घटना किस अन्य विषय से सम्बन्धित है जैसे प्रश्नों का उत्तर निदानात्मक अनुसंधान में खोजा जाता है। इसका सम्बन्ध नये तथ्यों की खोज और चरों के आपसी साहचर्य के परीक्षण से है।

मुल्यांकन अनुसंधान

मूल्यांकन अनुसंधान में कार्यक्रमों या सेवाओं का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन अनुसंधान में इस बात का निर्धारण किया जाता है कि किसी कार्यक्रम के क्या वांछित परिणाम हो सकते हैं।

अनुसंधान की प्रकृति

किसी घटना की व्यवस्थित तथा विवेचनात्मक खोज ही अनुसंधान है। यह चरों की पहचान करता है, उन्हें इकट्ठा करता है एवं आँकड़ों का विश्लेषण करता है। इससे व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि होती है। अनुसंधान में आंगिक मिलाप आवश्यक है। वास्तव में अनुसंधान विश्लेषण करने की औपचारिक, व्यवस्थित तथा गहन प्रक्रिया है, जिसमें अन्वेषण की सुव्यवस्थित संरचना शामिल होती है।

अनुसंधान की विशेषताएँ

अनुसंधान की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- 1. विषयनिष्ठता—कोई भी अनुसन्धान अनुसंधानकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से अलग होता है। अनुसंधानकर्ता का यह प्रयास होता है कि आँकड़ों के सन्दर्भ में व्यक्तिगत विचारधारा न अपनायी जाए। उसका प्रयास होता है कि निजी निर्णयों की अपेक्षा ठोस निष्कर्ष प्रदान करने वाले आँकड़ों एवं तर्कों को अपनाया जाए। उपकरणों के मानकीकरण, उचित रूपरेखा का चयन एवं आँकड़ों की सुनिश्चित विश्वसनीयता के द्वारा विषयनिष्ठता प्राप्त की जाती है।
- 2. सुस्पष्टता—वैज्ञानिक अनुसंधान में सुस्पष्टता सांख्यिकीय विधियों एवं तकनीक द्वारा प्राप्त की जाती है। केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, परिवर्तनीयता एवं आपसी सम्बन्ध जैसी अभिव्यक्तियाँ सच्चाई का प्रस्तुतीकरण करती हैं। स्पष्ट भाषा द्वारा अध्ययन की सही जानकारी दी जाती है।
- 3. संरचना—अनुसंधानकर्ता अनुसंधान के लिए एक विशेष संरचना का निर्माण करता है, जिसमें निम्नलिखित तत्त्व होते हैं—समस्या की परिभाषा, परिकल्पनाओं की जानकारी, आँकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण, पिकल्पनाओं का परीक्षण, पिरणामों की रिपोर्ट बनाना।
- 4. प्रामाणिकता—यह अनुसंधान की महत्त्वूर्ण विशेषता होती है। अनुसंधान विधियों एवं निष्कर्षों को अन्य शोधकर्ताओं द्वारा विश्लेषित किया जाता है। प्रामाणिकता का संबंध विषय तथा सुस्पष्टता से है। प्रामाणिकता दो दृष्टिकोणों से प्राप्त होती है—आँकड़ों के विश्लेषण द्वारा एवं अध्ययन की पुनरावृत्ति द्वारा।